IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, September 2025
Impact Factor: 7.67

Hkkjrh; lLd'fr % egkdfo HkoHkfr

¼ikf.MR; ,o thou n'ku d lnHk e½

Mk- jke dekj vk;

lgk;d ik/;kid] 'kkldh; ckil egkfo|ky;] ukxkoj ftyk Nrjij ¼e-i-½

'kk/k& lkjk'k %&

भवभूति सुधी दार्शनिक, व्यावहारिक तथा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे, उन्होंने न केवल शास्त्र सम्मत सिद्धांतो का विनियोग कर स्ववैदुष्य का परिचय दिया है अपितु दाम्पत्य प्रेम, मैत्री आदि का उच्चादर्श स्थापित किया है। उक्त बिन्दुओं को प्रस्तुत आलेख में उललेख किया गया है।

e[; 'kCn %& भारतीय, संस्कृति, महाकवि, भवभूति, आत्मसमर्पण, वेद, उपनिषद, सांरव्य एवं योगदर्शन आदि।

प्रस्तावना :–

'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' उक्ति से ज्ञात है कि वे व्याकरण मीमांसा तथा न्यायशास्त्र में निष्णात् दुर्धर्ष विद्वान थे। वाग्वाणी शारदा स्वयमेव इनका अनुकरण करती है[1]। भवभूति का पाण्डित्य स्वाभिमान से ओत–प्रोत था, पर व्यक्ति के सम्मुख आत्मसमर्पण उन्हें सह्य नहीं।[2] कवि को अपनें पाण्डित्य पर पूर्ण विश्वास है, कहीं न कहीं उनके प्रशंसक अवश्यक विद्यमान होगें।[3] उनके गुण सत्पुरूषों को स्वतः प्रकट हो जाते है।[4] कवि को वेद उपनिषद तथा सांरव्य एवं योगदर्शन का अगाध ज्ञान था[5]। भवभूति श्रोत्रिय ब्राहमण थे, समांसमधुपर्क वेद धर्मसूत्रकारों द्वारा विहित है[6] राम शम्बूक को आनन्दमय, दिव्य सम्पति सम्पन्न वैराजलोक में निवास हेतु आशीर्वाद देते है–

;=kuUnk'p eknk'p] ;=i.;k'p lein%A
ojktk uke r ykdkLrt lk% lUr r f'kok%AA[7]

उपर्युक्त पद्य ऋग्वेद के मंत्र पर आधरित है– **^;=kuUnk'p ;knk'p ien vklrA[8]** कल्याणप्रद कथन की प्रशंसा करती है। जो ऋग्वेद मंत्र से साम्य रखता है।[9] कवि ने अथर्ववेद संबंधी ज्ञान का परिचय दिया है, जहाँ विश्वामित्र राम को तीव्र अभिचार विधि के समान शत्रुहन्ता बताते है– 'ब्रहमद्विषो हयेष निहन्ति सर्वानाथर्वणस्तीव्र इवाभिचारः।[10] राम परशुराम को अथर्ववेद के समान अमित शक्ति से सम्पन्न कहते है–

i.;k·fi Hkhedek fuf/kokrkuk pdkLR;fer'kfä%A
efrefHkjke?kkjk foHkfnokFko.kk fuxe%AA[11]

जनक पुरोहित शतानन्द की प्रशसा [12]। ऐतरेय–ब्राहमण[13] के समकक्ष है। लव तथा बटुगण के अश्वमेधयाग विषयक वार्तालाप में प्रयुक्त 'काण्ड' पद– मूर्खाः पठितमेर हि युष्माभिरपि तत्काण्डम– शतपथ ब्राहमण (13 अध्याय) तथा तैत्तिरीय ब्राहमण (3/8/9/4) में निर्दिष्ट है[14] जिसमे अश्वों तथा सैनिकों की संख्या का उल्लेख है।

DOI: 10.48175/IJARSCT-29019

भवभूति ने पुराणों में उपदिष्ट ज्ञान का वर्णन किया है, परशुराम जनक को सूर्यशिष्य याज्ञवल्क्य का शिष्य बताते है—त्वं ब्राहमण्यः परिणतश्चासि धर्मेण युक्त। स्त्वां वेदान्तेष्वचरमृषिः सूर्यशिष्यः शशास।[15] पुराणों[16] मे याज्ञवल्क्य द्वारा वैशम्पायन से अधीत वेद का वमन तथा सूर्य की कृपा से शुक्ल यजुर्वेद की प्राप्ति वर्णित है। कवि नें महावीरचरितम् के प्रारंभिक पद्य[17] में उपनिषदों के गूढ़ तत्वों का प्रकाशन किया है, यह श्वेताश्वरोपनिषद[18] तथा वृहदाण्यकोपनिषद्[19] से साम्य रखता है। आत्रेयी का कथन 'भूयांस उद्गीथ विदो वसन्तिः[20] छान्दोग्योपनिषद में[21]वर्णित उद्गीथ पर आधारित है। सीता विरह से दुःखाभिभूत हो जनक आत्महत्या हेतु अन्धता मिस्त्र का वर्णन करते है— अन्धतामिस्त्र ह्यसूर्यानाम ते लोकास्तेभ्यः प्रतिविधीयन्ते य आत्मघातिन इत्येवभृषयो मन्यन्ते'[22] यह वाक्य ईशावास्योपनिषद के मंत्र पर आधारित है।[23]

भवभूति द्वारा 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' उक्ति में प्रयुक्त 'वाक्य' पूर्वमीमासा विषयक ज्ञान का संकेतक है। राम के कथन में प्रयुक्त अर्थवाद[24] पद मीमांसा [25] का परिभाषिक शब्द है। भवभूति ने वेदान्त दर्शन में वर्णित 'विवर्त' ज्ञाना का संकेत किया है, विद्याधर की उक्ति दर्शनीय है—

fo|kdYiu e#rk e?kkuk Hk; IkefiA
cã.kho foorZuk Dokfi ifoy;% dr%AA[26]

व्याकरण तो शब्दब्रहम का रूप है,'अथ स भगवान् प्राचेतसः प्रथमं मनुष्येषु शब्दब्राह्मणस्तादृशं विवर्तमितिहासं रामायणं प्रणिनाय'[27] एवं 'शब्द्रहमिदः कवेः परिणता प्राज्ञस्या वाणीमिनाम्'[28]। ब्रहमज्ञान के बाद ब्रहम ही प्रिय होता है। तप एवं स्वाध्याय से ब्रहम का साक्षात्कार होता है—

y{;Ur fofo/kkJek% fLFkjri% Lok/;k; Ik{kkRdr
ckge.kk fuoIfUr ;= eu;% dYifLFkr Ikf{k.k%AA[29]

सृष्टि का यह नियम है कि प्राणी यहाँ पर लीन हो जाते हैं 'एव किलेयं पा०चभौतिकी सृष्टिः।[30] जीवलोक तो निर्जन वन के तुल्य है—'शून्यारण्यसंनिभं पुनरपि मन्दभागिनी विभावयामि जीवलोकमिति'।[31] भवभूति को सांख्य तथा योग दर्शन का भी स्पष्ट ज्ञान था। राम तो पुराणपुरूष त्रिगुण अर्थात् सत्व, रजस, तमस से युक्त प्रकृति के साक्षात् अवतार है।[32] यहाँ पर सांख्य सम्यत प्रकृति का वर्णन किया गया है। चन्द्रकेतु सत्वगुण से युक्त अन्तःकरण वाले सर्वज्ञ मंत्र—दृष्टा ऋषियों की प्रशंसा करता है**&^vij·fi iph;eku&IRoidk'kk% Lo; IoeU=n'k% i';fUrA**'[33]

कवि ने योगशास्त्र विषयक ज्ञान का निर्देश किया है। वशिष्ठ परशुराम को ब्राहमणोचित मार्गविलम्बन का उपदेश देते है जिसमें योगशास्त्रीय भावना—मैत्री,विशोका ऋतम्भरा प्रज्ञा आदि का वर्णन किया है।[34] मालतीमाधवम् में आकर्षित करने वाली सिद्धि का क्रियान्वयन वर्णित है[35]। अन्यत्र कवि नें योग तथा तन्त्र ज्ञान का वर्णन किया है।[36] भवभूति नें न्यायशास्त्र विषयक ज्ञान का परिचय दिया है। दशरथ द्वारा राजाजनोचित कर्तव्य के वर्णन के समय न्यायशास्त्रीय पद प्रयुक्त है—

vKk ok ;fn ok foi;l;xrKkuk·Fk IngHkn]
n"Vkn"Vfojkf/k deZ d`:r ;LrL; xkIrkx`:%A
fu%Ingfoi;l; Ifr iuKkuu fo:)fØ;k]
jktk pRi`:"k u 'kkfLr rn;k ikIr% i`tkfolyo%AA[37]

सौधातकि की उक्ति भोः 'निगृहितोऽसि' में प्रयुक्त 'निग्रह' पद न्यायशास्त्र का पारिभाषिक शब्द है, वहाँ निग्रहस्थान षोडशपदार्थो में परिगणित है।[38] माधव मालती का स्मरण करता है,वहाँ संस्कार, स्मृति प्रत्यय आदि पारिभाषिक पद प्रयुक्त है।[39] भवभूति नें तंत्र—शास्त्र विषयक ज्ञान का अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन किया है। सौदामिनी तंत्रमत्र के प्रभाव से आकर्षिणी सिद्धि प्राप्त

DOI: 10.48175/IJARSCT-29019

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, September 2025 Impact Factor: 7.67

करती है।[40] कवि नें राजनीतिक ज्ञान का यथावसर प्रतिपादन किया है। माल्यवान शूर्पणखा के समक्ष साम,दाम,दण्ड,भेद आदि का निरूपण करता है। तथा छद्म दण्ड का औचित्य बताता है–

n.MkM0;H;f/kd 'k=k u idk'k% i'kL;rA
r".khn.MLr dr0;LrL; pk;ei Øe%AA[41]

दशरथ दृष्टदमन विषयक कर्तव्य का स्मरण करते हैं।[42] राज्य राम कर्तव्यनिर्वाहार्थ पत्नी का परित्याग करते है–

Lug n;k p] lk[; p ;fn ok tkudhefiA
vkjk/kuk; ykdL; eŒprk ukfLr e 0;FkkAA[43]

भवभूति कामशास्त्र में भी निष्णात् कवि थे। मालतीमाधवम् की प्रस्तावना में प्रयुक्त 'आयोजित कामसूत्र'[44] कवि के तत्संबंधी ज्ञान का प्रकाशक है। बुद्धिरक्षिता कामसूत्रकार कथन का वर्णन करती हैं–'कुसुमधर्माणो हि योक्षितः सुकुमारोपक्रमाः। तास्त्वनधिगत विश्वासैः प्रसभमुपक्रम्यमाणाः समप्रयोग विद्वेषिण्यो भवन्ति।' एवं किल काम–सूत्रकारा मन्त्रयन्ते।[45] महाकवि अर्थशास्त्र से संपूर्ण परिचित थे। माल्यवान का कथन[46] कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर आधारित है। भवभूति को लोक व्यवहार संवंधी ज्ञान का भी संपूर्ण ज्ञान था। राम तथा सीता का दाम्पत्य जीवन सम्पूर्ण जनमानस हेतु उच्चादर्श है।[47] संतान दम्पति के अंतःकरण में रहने वाली आनन्दग्रंथि है–

vUrdj.krRoL; nEiR;k% Lugl Jk;rA
vkuUnxfFkj dk· ;eiR;fefr iB;rAA[48]

महाकवि भवभूति कर्तव्यनिष्ठ है, प्रत्येक स्थित में इसके पालन पर उन्होंने बल दिया है। वानप्रस्थियों के द्वारा दैनन्दिक अनुष्ठान का निर्वाह अनिवार्य है–किन्त्वनुष्ठाननित्यत्वं स्वातन्त्रयम् पकर्षति।[49] भवभूति उदारचेता तथा सहृदय कवि है,अज्ञानी संसार के प्रति उन्होंने उदारता प्रदर्शित की है। दुर्मुख पुरवासियों को दुर्जन कहता है तो राम कहते हैं– ''शान्त पापं शान्तं पापम। दुर्जनांना पौरजनपदाः''।[50] लोक सीता की शुचितां पर संदेह करता है किन्तु अन्त में सभी इस लोकापवाद की निन्दा करते हैं। गुण की पूजा सर्वोपरि है लिङ्ग अथवा आयु की नहीं–गुणाः पूजास्थानं गुणिषुः न च लिङ्ग न च वयः।[51]

सभी विषयों में दक्षता और सुभाषित रत्नों के निवेशन का संस्कार है–

lorke[k onX/;e{kje lHkkf"kr jRUklpkj lLdkj.keA[52]
e|kfrØkUr ok.kh okXer tylkjk tyntykl kjefr'krA[53]

इस प्रकार से महाकवि भवभूति की आत्मसंविति ज्ञापित करते है। महाकवि भवभूति जहाँ प्रथित कवि नाटककार तथा सुधी दार्शनिक है, वहीं मानवीय गुणों से ओत–प्रोत हैं। उन्होंने मनु के द्वारा बताए गए नियमों का पालन करते हुए आचार संहिता का निर्धारण किया है। उनका व्यक्तित्व ब्राहमणोचित, गांभीर्य, गर्व एवं विनयशीलता आदि से समन्वित है, साथ ही कवि सुलभ कोमलता,विदग्धता एवं दार्शनिकता की सूक्ष्मक्षिका से युक्त है।

lnHk lkr %&

1 **¼d½ ; cgek.kfe; noh okXo';okuorr&m-jk-&1@2**
¼[k½o'pokp% dookD; lk p lekJ;k dFkk&egkohj&1@4

2 **mÙkjjkepfjre 6@24**

DOI: 10.48175/IJARSCT-29019

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, September 2025 Impact Factor: 7.67

3 ;s uke dfpfng u% iFk;UR;oKk tkufUr rs fdefi rkUifr u"k ;Ru%A mRiRL;rs fg ee dk·fi leku/kek dkyk g;;s fujof/kfoiqYkkp iFohA ¼ekyrhek/koe 1@6½

4 ekyrhek/ke&1@7

5 ekyrhek/koe 1@8

6 ¼d½ lK0;rs oRlrjh lfi";Uu p iP;rA Jkfr; Jkf=;xgkukxrkMfl t"kLo u%AA egkohjpfjre 3@2

¼[k½ lekIk e/kid% bR;kEuk;s ogeU;ekuk% Jkf=;kH;kxrk; oRlrjhA egk{k ok ipfUr xgef/ku%AA rs fg /kes /kesIl=dkjk% lekeufUrA m-jk-p-&1@6

7 mÙkjjkepfjre&2@12

8 _Xon 9@113@11

9 mÙkjjkepfjre&4@62&rqyuk _Xon 10@79@2

10 egkohjpfjre 1@62

11 egkohjpfjre 2@24

12 u rL; jk"Vs 0;Fkrs u fj";fr u th;frA Ro fo}ku okge.kks ;L; jk"Vxksi% ijkfgr%AA ¼egkohjpfjre 3@18½

13 {k=s.k {k= t;fr cyu cye'ujA ;L;so ckge.kks fo}ku jk"Vxksi% ijkfgr%AA ¼,rj; ckge.k&8@25½

14 m0 jk0 p0& 4@26&17

15 egkohjpfjre 3&27

16 fo".kqijk.k 3@5]JhenHkkxor 12@6 cg;k.M;jk.k 2@25] ok;qijk.k 1@3

17 egkohjpfjre 1@1

18 fuR;k fuR;kuk pru'pprukuk---A 'ork'ojkifu"kn 6@13 dk iFkek/kA

19 ognkj.;dkifu"kn&4@4@13

20 mÙkjjkepfjre 2@3 dk iok/k

21 NkUnX;kifu"kn 1@1@1

22 mÙkjjkepfjre 4@3&4

23 bl'kkokL;kifu"kn&3

24 vFkokn ,on% nk"k rq e dFkfpRdFk;] ;u ifrfo/kh;UrA m0jk0 1@39&40

25 ik'kR;fuUnk;rjiij okD;eFkokn%A vFk lxg i0&190

26 mÙkjjkepfjre& 6@6

27 mÙkjjkepfjre 2@5&6

28 mÙkjjkefpjre 7@21

29 egkohjpfjre&7@13

30 egkohjpfjre& 6@59&60

31 ekyrhek/koe 7@1&2

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, September 2025 Impact Factor: 7.67

32 bn fg rRo ijekFk Hkkte; fg lk{kkRi: "k% ijk.k%A f=/kk fofHkUuk idfr fdy"kk =kr; HkfoLou lrkMoh.k%AA e0p0&7@2

33 mÙkjjkepfjre 5@15&16

34 egkohjpfjre 3@4&5 ryuk ;kx'kkL=&e=hd : .kkefnrk i{kk.kk l[kn%[k i.;ki.; fo"k;k.kk Hkkoukf'pUr ilknueA 1@13

35 ekyrhek/koe 9@53

36 ekyrhek/koe 5@1&3]9&10

37 egkohjpfjre 3@35

38 ¼iek.kie; l'k; i;ktu n"VkUrfl)kUrko;o rd fu.k; okntYifor.MkgRok Hkk lPNy tkfr fuxgLFkkukuk rRoKkuk fUu%J; lkf/kxe½& rdHkk"kk&i"M 8

39 ee fg&lEifr lkfr'k; ikDrukiyEHk lHkkforkReu% lLdkj jL;kuojricki/kkRirh;ekuLrf) ln'k% iR;k;Urjjfrj lLdriokg% fi;rHkkLefr iR;;kUifÙk lrkuLr Ue;feo djkfr ¼ekyrhek/koe½ 5@9&10

40 ekyrhek/ko 9@53

41 egkohjpfjre 4@4

42 nnkUrkuk neu fo/k;% {kf0=;"ok;rUr nnfUrLRo o;efi p r {kf0=;k% 'kkflokj%A** egkohjpfjre 3@34 dk iokf/k

43 mÙkjjkepfjre 1@12

44 ekyrhek/koe 3@17

45 ekyrhek/koe 7@0&1 ryuk dke l= i0&144

46 y0/okfi 0;lluinefHk;äL; dPNlk/; Hkofr bfr egkohjpfjre 4@7&8 ryuk vFk'kkL= 7@5

47 mÙkjjkepfjre&1@27

48 mÙkjjkepfjre& 3@17

49 mÙkjjkepfjre 1@8

50 mÙkjkepfjre 1@43&44

51 mÙkjkepfjre 4@11

52 ekyrhek/koe 8@4&5

53 ekyrhek/koe 10@17